चंदनबाला

शांतिलाल ना. शाह 'सत्यम'

बच्चों की कहानियां

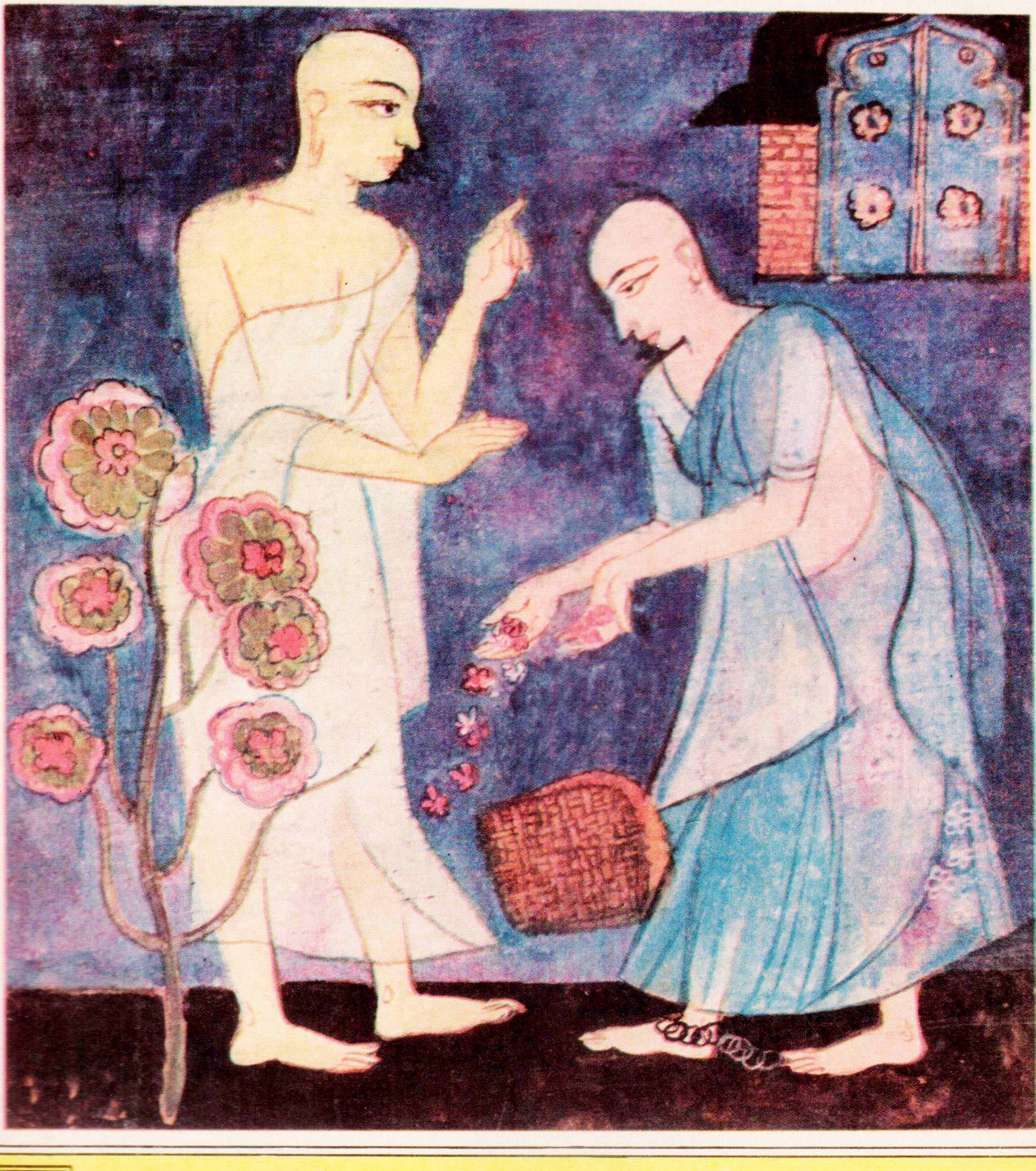

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा बम्बई

हमारे देश की संस्कृति दुनिया में सबसे पुरानी और काफी समृद्ध है। मगर आपसी झगड़ों, जलन और बैर की वजह से हम कमजोर हो गये हैं और इसी वजह से डरी-सहमी हालत में जी रहे हैं। नये जमाने की शिक्षा भी हमें सुधार नहीं पाई है। इसीलिए इस कमजोर और खतरनाक हालत से हम उबर नहीं पा रहे हैं। फिर भी यह हकीकत है कि हमारी संस्कृति अत्यंत जीवंत है, कभी मिट नहीं सकती है।

दूसरे प्राणियों के मुकाबले आदमी में यह एक विशेषता है कि उसमें धर्म की सूझबूझ है। अच्छा-बुरा, धर्म-अधर्म परखने का उसे विवेक है। मैं तो इसे ही सच्चा धर्म मानता हूं। 'धर्म' वही है जिससे आदमी का सुखी, सार्थक जीवन बनता है। धार्मिक इन्सान समझता है कि दूसरों के सुख में उसका भी सुख है। दूसरों को तबाह करके कोई सुखी नहीं हो सकता। दूसरों के दुःख से जो सुख उठाता है, वह अधर्मी है।

सच्चाई और अहिंसा, धर्म पर चलने के दो रास्ते हैं। दुनिया के सभी धर्मों में इन दो बातों पर जोर दिया गया है। हिन्दू, इस्लाम, बौद्ध, ईसाई, पारसी, जैन, सिख आदि सभी धर्मों के पैगम्बरों ने धर्म के जिन आदर्शों की बात कही है, वह हर इन्सान के लिए समान रूप से लागू होती है। हमारे देश की परंपरा में सब धर्मों के लिए इज्जत की भावना रही है। हिन्दू धर्म का दायरा बहुत बड़ा और सबका भला चाहनेवाला रहा है। अफसोस है तो इस बात का कि हम लोगों में एक के बाद एक कमजोरियां आती गई और एक उदार धर्म की अनमोल दौलत हम संभाल नहीं सके।

आज इस बात की जरूरत है कि दुनिया के विकसित धर्मों में हमारे लिए जो आवश्यक बातें कही गयी हैं उन्हें हम समझें और अपने जीवन में उन पर चलने की कोशिश करें।

नई पीढ़ी को सही समझ और शिक्षा देने के लिए ऐसे विचार उनके सामने रखना जरूरी है जिससे वे आदर्शों की तरफ प्रेरित हों और जिन्दगी का सही रास्ता उन्हें मिल सके।

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा ने इसी उद्देश्य से दुनिया के मुख्य धर्मों में जो शिक्षाप्रद कहानियां हैं, बड़े-बड़े संत–पैगम्बरों की जिन्दगी में जो सच्ची घटनाएं हुई हैं, उन्हें लेकर एक सौ सचित्र पुस्तकें छापने की योजना बनाई है।

कहानियां इस तरह रखी गयी हैं कि बच्चों को वे उपदेश नहीं, जीवन से जुड़ी हुई मालूम हों और आसानी से समझ में आ जायें। मुझे उम्मीद है कि बच्चों के माता-पिता भी इन कहानियों को दिलचस्पी से पढ़ेंगे और अपने जीवन को समृद्ध करेंगे।

मुझे उम्मीद है कि इस कोशिश को पसन्द किया जायेगा, इस पर अमल किया जायेगा और इसका प्रचार किया जायेगा।

मोरारजी देसाई

अध्यक्ष,
हिन्दुस्तानी प्रचार सभा

बच्चों की कहानियां–४१

चंदनबाला

शांतिलाल ना. शाह 'सत्यम'

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा

बम्बई

© हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, १९८२

संपादक :

मूलशंकर भट्ट

चित्रकार :

मृगांक जोशी

प्रकाशक :

वाडीलाल डगली

मानद मंत्री

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा

महात्मा गांधी मेमोरियल बिल्डिंग

७, नेताजी सुभाष रोड

बम्बई–४०० ००२

मुद्रक :

अकील दीवानजी

ऑनलुकर प्रेस

१६, सासुन डाक

कोलाबा, बम्बई–४०० ००५

मूल्य :

दो रुपये

चंदनबाला

कोई ढाई हजार साल पहले की बात है।

चंपा नगरी में राजा दधिवाहन का शासन था। उसकी रानी का नाम धारिणी और बेटी का नाम वसुमती था। सुख-शांति और वैभव से भरा उनका जीवन था। किसी बात की उन्हें कमी नहीं थी।

एक दिन कौशाम्बी के राजा शतानिक ने अचानक चंपानगरी पर धावा बोल दिया। शतानिक की विशाल सेना के आगे, दधिवाहन की सेना बहुत छोटी थी। दधिवाहन हार गया। उसकी सेना में भगदड़ मच गयी।

राजा दधिवाहन को भी मैदान से भागना पड़ा।

विजय के उन्माद में शतानिक के सैनिकों ने चंपानगरी में लूटमार शुरू कर दी। जो भी, जिसे हाथ लगता गया लूट ले गया। किसी ने सोने की मुहरें लूटीं तो किसी ने स्त्रियों के गहने लूट लिये।

शतानिक के एक सैनिक ने दधिवाहन की रानी धारिणी तथा बेटी वसुमती को पकड़ लिया और नगर से भाग निकला।

धारिणी ने रास्ते में सैनिकों से पूछा, "भाई, हमें तुम कहां ले जा रहे हो?"

सैनिक ने जवाब दिया, "मैं तुम दोनों को कौशाम्बी ले जा रहा हूं।"

"कौशाम्बी? किसलिए?"

"तुझे मैं अपनी पत्नी बनाऊंगा, और तेरी लड़की को नीलाम करके उससे अच्छे दाम कमाऊंगा।"

धारिणी को ऐसे बेशरम शब्दों से सख्त चोट पहुंची। उसका दिल टूट गया। अपनी इज्जत बचाने के लिए उसने रास्ते में ही आत्महत्या कर ली।

मां की आत्महत्या ने फूल-सी नाजुक वसुमती को बहुत आघात पहुंचाया। राजमहलों में बसनेवाली, राजवैभव में पलनेवाली अपनी मां का ऐसा अंत देखकर वसुमती कांप उठी।

लड़ाई में दुश्मन के हाथों सख्त पराजय पानेवाले अपने पिता के भाग जाने से और लाज लुटने के भय से आत्महत्या कर लेनेवाली अपनी मां के अभाव में वह अपनें आपको एकदम असहाय समझने लगी। वह पेड़ के पत्ते की तरह कांप उठी। हंसी से भरा रहनेवाला उसका चेहरा बिल्कुल कुम्हला गया। चिंता, भय और भविष्य के अंधकार से वह व्याकुल हो उठी।

कुछ फासला तय करने के बाद वसुमती को प्यास लगी।

उसने पूछा, "यहां कहीं पानी मिल सकेगा?"

सैनिक ने कहा, "अब थोड़ी देर पानी के बिना ही चला ले।"

वसुमती ने पूछा, "क्यों?"

सैनिक बोला, "सुन, अभी हम कौशाम्बी पहुंच जायेंगे। वहां मैं तुझे ठंडा पानी पिलाऊंगा। जरा सोच तो सही, तुझे पानी पिलाये बिना कैसे चलेगा?

"मैं तो तुझे नीलाम करना चाहता हूं। बिना पानी के तेरा चेहरा कुम्हला जायेगा तो कोई तेरे अच्छे दाम नहीं देगा। तेरी नीलामी से मुझे तो खूब धन कमाना है। तेरे जैसी खूबसूरत लड़की अब फिर से मुझे कहां मिलेगी? अच्छा, अब चल, जरा जल्दी-जल्दी कदम उठा, हमें जल्दी से कौशाम्बी पहुंचना है।"

आखिर वे कौशाम्बी पहुंचे।

कौशाम्बी में एक विशाल चौक था। उसके बीचोबीच खड़ा होकर, वह सैनिक फूल-सी कोमल, अप्सरा-सी सुंदर वसुमती की नीलामी करने लगा। कुछ ही देर में लोगों की भीड़ जम गयी।

वसुमती को देख कई लोगों के मुख से निकल पड़ा, "अरे, रे, क्या विधाता की करनी! ऐसी देवकन्या-सी सुंदर लड़की को किसी के घर जाकर दासी बनना पड़ेगा! राजा के राजमहल में रहने जैसी इस लड़की को कूड़ा-कचरा-गोबर साफ करना पड़ेगा!!"

" अरे, रे, क्या विधाता की करनी ! "

नीलामी चल रही थी तभी उस नगर का एक सेठ वहां आया। उसका नाम धनावह् था। वसुमती को देखकर उसके दिल में पिता-सा प्रेम जाग उठा।

ईश्वर ने धनावह् को सब कुछ दिया था मगर एक संतान का उसे अभाव था।

वह् उस सैनिक के पास गया और मुंहमांगी कीमत देकर वसुमती को खरीद लिया। उसे लेकर घर की ओर चल पड़ा।

वसुमती अनजाने भय से कांप रही थी।

धनावह् सेठ ने यह् देखा तो बोला, "बेटी, मन में भय न रखना। मेरे घर तुझे किसी प्रकार का दुख न होगा। अपनी बेटी की तरह् तेरा पालन करूंगा।"

सेठ के इन प्रेमभरे शब्दों से वसुमती का डर खत्म हुआ। अपने सौम्य और शांत स्वभाव से उसने घर के सभी लोगों का दिल जीत लिया, और लोग उसे धीरे-धीरे "चंदनबाला" के नाम से पुकारने लगे।

धनावह् सेठ को चंदनबाला का आगमन ईश्वर के वरदान जैसा लगा। सगे पिता की भांति वे उसका लालन-पालन करने लगे।

दिन-पर-दिन बीतने लगे। चंदनबाला सबके दिल जीत सकी किन्तु धनावह् सेठ की पत्नी मूला का दिल वह् न जीत पायी। हालांकि इसके लिए वह् खुद दोषी नहीं थी। मूला का स्वभाव ही ईर्ष्यालु था।

चंदनबाला को देखकर मूला सोचती, "चंदनबाला इतनी खूबसूरत है कि अगर सेठ उसके रूप के मोह् में फंसकर उससे शादी कर लेंगे तो घर में मेरी कोई जगह् नहीं रहेगी। चंदनबाला सेठ की प्रेमपात्र बनेगी और मुझे उसकी दासी बनकर रहना पड़ेगा।"

चंदनबाला के प्रति उसके मन में ईर्ष्या पल रही थी। वह् दिनोदिन चंदन-बाला के प्रति निर्दयी व कठोर बनती गयी। सेठ के पीछे वह् उसे तंग करने लगी। अपने स्वभाव के कारण चंदनबाला इस बारे में सेठ से कुछ नहीं कहती थी। वह् सारा दुःख चुपचाप सहने लगी।

एक दिन एक घटना घटी जिसने मूला की ईर्ष्या को खूब भड़का दिया।

दुकान से सेठ घर आये तो घर में

ार-चाकर, सेठानी या मूला कोई भी दिखाई दिया। सेठ के पैर कौन ाये? सेठ यह सोच ही रहे थे कि तभी नबाला हाथ में पानी का लोटा लेकर ी।

सेठ बोले, "बेटी, कोई नौकर नहीं मेरे पैर क्या तू धोयेगी?"

चंदनबाला ने कहा, "मैं पैर धोऊंगी के। नौकर नहीं हैं तो क्या हुआ? ापकी बेटी जैसी हूं। मुझ पर आपके कार वैसे भी कुछ कम नहीं हैं।"

सेठ चंदनबाला के ये प्रेमभरी मीठी ं सुनते रहे।

चंदनबाला झुककर सेठ के पैर पानी से धोने लगी। ऐसा करते हुए उस लम्बे-लम्बे बाल नीचे मिट्टी में फैल गये

सेठ ने सोचा कि उसके इतने ल बाल यदि मैं नहीं उठाऊंगा तो कीचड़ खराब हो जायेंगे। उसने चंदनबाला केश संभालकर एक हाथ में पकड़े रखा

यह नजारा मकान की ऊपरी मंजि की खिड़की से मूला देख रही थी। उस सोचा कि सेठ चंदनबाला के रेशमी बा से खेलकर, प्रेम कर रहे हैं। यदि प्य का यह खेल बढ़ेगा तब तो जरूर चंदनबाला से विवाह करके, उ गृहस्वामिनी बनायेंगे।

उसने तय कर लिया कि

चंदनबाला से जरूर बदला लेगी। वह मौके की ताक में रहने लगी। और आखिर वह मौका भी एक दिन आ पहुंचा।

दुकान से लौटकर सेठ ने घर के सभी लोगों को पास बुलाकर कहा, "कल सुबह बड़े सबेरे, मैं दूसरे गांव चला जाऊंगा। दो-तीन दिन वहां रहूंगा। मेरी अनुपस्थिति में तुम सब मिल-जुलकर रहना। घर में कोई बुरी बात न घटे, इसका खयाल रखना।"

उन्होंने मूला से कहा, "मूला, मेरी गैर-हाजरी में तू चंदनबाला का पूरा खयाल रखना। उसे किसी तरह का दुःख न देना। हमारी सगी बेटी के समान है वह। उसे किसी बात की कमी महसूस न होने देना।"

मूला ने कहा, "आप निश्चिंत रहें। मैं उसका बराबर खयाल रखूंगी। किसी तरह की कमी या दुःख उसे न होने दूंगी। मुझे भी तो उसके लिए प्रेम है।"

ऊपर से तो मूला यह कह रही थी मगर भीतर सोच रही थी कि कब सेठ रवाना हों और कब मैं चंदनबाला को सबक सिखाना शुरू करूं। उसे भूख, प्यास से तड़पा-तड़पाकर, काली कोठरी में बंद कर दूं!

दूसरे दिन सेठ चले गये। बस, फिर क्या था, मूला ने चंदनबाला पर जुल्म बरसाना शुरू कर दिया।

उसने नाई को बुला भेजा। नाई से उसने चंदनबाला के सारे बाल कटवा दिए और उसे गंजा करा दिया। चंदन-बाला का सर, जो अब तक रेशम-से खूबसूरत, मुलायम बालों से चमकता था, अब गंजा, भद्दा लग रहा था।

फिर एक लुहार बुलाया गया। चंदनबाला के पैरों में लोहे की बेड़ी पहना दी गई और उसे एक अंधेरी कोठरी में बंद कर दिया गया।

सब काम निबटाकर, घर के सारे नौकरों को मूला ने हुक्म दिया, "खबरदार, जो कोई यह बात सेठ से कहे। मैं उसे जिंदा नहीं छोड़ूंगी! यह मेरा हुक्म है।"

भूख-प्यास से तड़पती चंदनबाला ने अब भी अपना स्वभाव बदला नहीं था। मूला के प्रति उसके मन में शत्रुता का भाव नहीं था। वह सोच रही थी कि ईर्ष्या और बदले की आग में जलकर जो अपनी साधारण समझ ही खो बैठी हो,

उस पर गुस्सा क्या करना ! आदमी जब क्रोध और इंतकाम की चपेट में आ जाता है तब वह आदमी नहीं रह जाता है। वह दया का पात्र बन जाता है।

बड़ी सहनशीलता के साथ चंदनबाला ने अंधेरे में, भूखे-प्यासे अपने दिन बिताये।

तीन दिनों बाद सेठ वापस लौटे। उन्होंने घर में चंदनबाला को नहीं देखा तो चौंके।

मूला से पूछा, "मूला, चंदनबाला कहां है? घर में दीख नहीं रही। क्या वह कहीं बाहर गयी है?"

मूला ने जवाब दिया, "मैं कुछ नहीं जानती। कौन जाने कहां गयी!"

सेठ की चिंता बढ़ती गयी। जाने क्या हुआ होगा चंदनबाला का! सेठ बेचैन हो गये। उन्होंने नौकरों से पूछना शुरू किया किन्तु मूला का हुक्म टालने की हिम्मत किसे थी! उन लोगों ने कहा, "हम कुछ नहीं जानते हैं।"

सेठ बेचैन हो उठे।

सेठ के घर में एक पुरानी, बूढ़ी दासी थी। सालों से वह उनके घर में काम करती थी। सेठ को बेचैन देखकर उससे रहा न गया। वह सेठ को अकेले देखकर उनके पास पहुंची। धीमी आवाज में उसने सारी घटना सेठ जी से कह दी।

सेठ जी चौंककर उठ खड़े हुए और उस अंधेरी कोठरी की ओर दौड़ पड़े। कोठरी का दरवाजा खोला।

सेठ ने देखा कि वहां गंजी चंदनबाला, तीन दिनों से भूखी-प्यासी, उदास बैठी थी। सेठ तो उसे ताकते ही रह गये। उसका चेहरा कुम्हला गया था। उसे जल्दी कुछ खिलाना चाहिए, ऐसा सोचकर वे रसोईघर में गये। रसोईघर में उन्हें कुछ भी न मिला। मिले उन्हें उबाली हुई उड़द की दाल के कुछ दाने। सेठ उसे ही चंदनबाला के पास ले आये।

वे बोले, "बेटी, इसके सिवा रसोई में और कुछ भी नहीं है। तू तीन दिनों से भूखी है। ये थोड़े से दाने खा ले तो चैन होगा। मैं अभी लुहार को बुलवाता हूं तेरी ये बेड़ियां तुड़ाने के लिए", और उड़द की दाल चंदनबाला के पास रखकर वे लुहार को बुलवाने भागे।

अकेले में बैठी चंदनबाला ने ज्यों ही खाने के लिए हाथ उठाया कि उसे खयाल आया, "मैंने तीन दिनों से कुछ भी अन्न-जल लिया नहीं है। अनजाने ही मुझसे 'अठ्ठम' का व्रत हो गया। अब यदि साधु को भिक्षा देने के बाद ही मैं अठ्ठम व्रत को पूरा करूं तो मुझे इस व्रत का फल भी मिल सकता है।"

उसने उड़द के दानों को हाथ नहीं लगाया और अतिथि साधु की राह देखने

" सेठ जी उस अंधेरी कोठरी की ओर दौड़ पड़े ।"

लगी, "यदि कोई साधु उबाले हुए उड़द के ये दाने भिक्षा में ले लेगा तो मेरा जीवन धन्य हो जायेगा।"

अब हुआ यह कि इन्ही दिनों भगवान महावीर का पांच मास और पच्चीस दिनों का उपवास चल रहा था।

उपवास के शुरू में ही महावीर जी ने मन में तय कर लिया था कि किसी राजकुमारी का सिर मुंडा हो, पैरों में लोहे की बेड़ियां हों, पास ही सूप में उड़द के उबले दाने पड़े हों और उस लड़की का तीन दिन का अठ्ठम व्रत हो तथा उसकी आंखों से आंसू बह रहे हों, तभी उसके उड़द के दानों की भिक्षा के द्वारा मैं अपनें व्रत की पूर्ति करूंगा। पांच मास और पच्चीस दिनों से चल रहे उनके व्रत की पूर्णता नहीं हो पायी थी।

आज छब्बीसवें दिन भगवान महावीर कौशाम्बी में भिक्षा के लिए निकले थे। घर-घर से भगवान महावीर को भिक्षा देने के लिए लोग उत्सुक थे, मगर भगवान का संकल्प पूरा नहीं हो रहा था, इसलिए महावीर खाली हाथ हर घर से चले आते थे।

घूमते-फिरते भगवान धनावह सेठ के घर आ पहुंचे। उनकी नजर, सीधे उस अंधेरी कोठरी के खुले दरवाजे से, अंदर बैठी हुई चंदनबाला के ऊपर पड़ी। चेहरे की दमक से साफ जाहिर हो रहा था कि वह कोई राजकुमारी ही थी। उसका माथा गंजा था। पास के सूप में उड़द के उबले हुए दाने भी पड़े थे।

भगवान महावीर चंदनबाला के नजदीक जाने लगे।

चंदनबाला ने यह देखा और उसका दिल खुशी से नाच उठा। भगवान महावीर उसके अन्न के दानों से व्रत पूरा करेंगे, यह सोचकर ही चंदनबाला सारा दु:ख भूल गयी।

कुछ पल पहलेवाली उदासी उसके चेहरे से गायब हो गयी, और हल्की-सी मुस्कान फैल गयी। उदासीन आंखों में खुशी की झलक आ गयी।

भगवान जैसे ही चंदनबाला के नजदीक पहुंचे, चंदनबाला ने कुछ झुंझलाहट के साथ भगवान से कहा, "भंते! आपका कई दिनों से उपवास है, यह मैं जानती हूं। आपके भिक्षापात्र में मैं सिर्फ ये साधारण, उबले हुए उड़द के कुछ दाने ही डाल सकती हूं, इसका मुझे अफसोस है, क्योंकि फिलहाल में बंदी हालत में

" भगवान महावीर ने अपना भिक्षापात्र उसके आगे कर दिया ।"

हूं। उड़द के दाने देकर ही मुझे संतोष करना पड़ेगा, इसके लिए क्षमा मांगती हूं।"

लेकिन भगवान चुपचाप, कुछ भी लिए बिना वापस लौटने लगे। चंदनबाला ने सोचा कि सिर्फ उड़द के दाने देखकर ही भगवान बिना लिए ही चले गये।

लेकिन हकीकत तो यह थी कि जैसे ही चंदनबाला के सामने भगवान ने भिक्षापात्र बढ़ाया, उन्हें अपने निश्चय का खयाल आ गया। चंदनबाला के चेहरे पर खुशी की झलक थी। उसकी आंखों में आंसू तो थे नहीं! उनकी प्रतिज्ञा अधूरी रह जाती और इसीलिए वे बिना कुछ लिए ही लौट गये।

चंदनबाला के मन को बहुत चोट पहुंची। उसे इतना दुःख हुआ जैसे पारस-मणि खो गयी हो। पलभर पहले की खुशी खत्म हो गयी। उसका मन वश में न रहा। आंखें भर आयीं। सिसकियां भर-भर कर वह रो पड़ी।

उसकी सिसकियों की आवाज भगवान महावीर के कानों में टकरायी। वे रुक गये। पीछे मुड़कर उन्होंने चंदनबाला की ओर देखा। उसकी आंखों से टप-टप आंसू टपक रहे थे। ...और भगवान महावीर का संकल्प अब पूरा हो रहा था।

वे तुरन्त चंदनबाला के पास गये और भिक्षापात्र उसके सामने कर दिया। चंदनबाला ने बिना देर किए, उड़द के उबले हुए दाने उसमें डाल दिए।

सारे गांव में यह बात फैल गयी कि धनावह सेठ की एक दासी के हाथ से दिए गए उड़द के उबले दानों से, भगवान महावीर ने अपना व्रत पूरा किया है। उस दासी के दर्शन करने के लिए लोग बेचैन हो उठे। लोग धनावह सेठ के घर के पास इकट्ठे होते गये। देखते-देखते भीड़ लग गयी।

नगर के राजा शतानिक और रानी मृगावती ने भी यह बात सुनी। वे लोग भी पैदल चलकर धनावह सेठ के घर, उस दासी के दर्शन करने गये। उनके साथ चंपा नगरी का संपुल नामक एक रनवासक सेवक भी था।

वे तीनों चंदनबाला को देखते रह गये। रानी की नजर अचानक संपुल की ओर गई। संपुल का चेहरा किसी गहरे सोच में डूबा हुआ था।

हूं। उड़द के दाने देकर ही मुझे संतोष करना पड़ेगा, इसके लिए क्षमा मांगती हूं।"

लेकिन भगवान चुपचाप, कुछ भी लिए बिना वापस लौटने लगे। चंदनबाला ने सोचा कि सिर्फ उड़द के दाने देखकर ही भगवान बिना लिए ही चले गये।

लेकिन हकीकत तो यह थी कि जैसे ही चंदनबाला के सामने भगवान ने भिक्षापात्र बढ़ाया, उन्हें अपने निश्चय का खयाल आ गया। चंदनबाला के चेहरे पर खुशी की झलक थी। उसकी आंखों में आंसू तो थे नहीं! उनकी प्रतिज्ञा अधूरी रह जाती और इसीलिए वे बिना कुछ लिए ही लौट गये।

चंदनबाला के मन को बहुत चोट पहुंची। उसे इतना दुःख हुआ जैसे पारस-मणि खो गयी हो। पलभर पहले की खुशी खत्म हो गयी। उसका मन वश में न रहा। आंखें भर आयीं। सिसकियां भर-भर कर वह रो पड़ी।

उसकी सिसकियों की आवाज भगवान महावीर के कानों में टकरायी। वे रुक गये। पीछे मुड़कर उन्होंने चंदनबाला की ओर देखा। उसकी आंखों से टप-टप आंसू टपक रहे थे। ...और भगवान महावीर का संकल्प अब पूरा हो रहा था।

वे तुरन्त चंदनबाला के पास गये और भिक्षापात्र उसके सामने कर दिया। चंदनबाला ने बिना देर किए, उड़द के उबले हुए दाने उसमें डाल दिए।

सारे गांव में यह बात फैल गयी कि धनावह सेठ की एक दासी के हाथ से दिए गए उड़द के उबले दानों से, भगवान महावीर ने अपना व्रत पूरा किया है। उस दासी के दर्शन करने के लिए लोग बेचैन हो उठे। लोग धनावह सेठ के घर के पास इकट्ठे होते गये। देखते-देखते भीड़ लग गयी।

नगर के राजा शतानिक और रानी मृगावती ने भी यह बात सुनी। वे लोग भी पैदल चलकर धनावह सेठ के घर, उस दासी के दर्शन करने गये। उनके साथ चंपा नगरी का संपुल नामक एक रनवासक सेवक भी था।

वे तीनों चंदनबाला को देखते रह गये। रानी की नजर अचानक संपुल की ओर गई। संपुल का चेहरा किसी गहरे सोच में डूबा हुआ था।

राणी ने धीरे से कानों में पूछा, " क्यों संपुल, क्या सोच रहा है ?"

संपुल बोला, " मानो-न-मानो, यह चंदनबाला दधिवाहन की पुत्री वसुमती ही है। वेश और नाम के बदल जाने से आदमी नहीं बदल जाता है।"

यह सुनकर रानी को खुशी हुई क्योंकि वसुमती की माता धारिणी और रानी मृगावती दोनों बहनें थीं। फिर भी रानी ने निश्चित तौर पर जांच भी करवा ली कि चंदनबाला वाकई वसुमती ही है।

"रानी मृगावती की बेटी वसुमती!" ऐसा कहते हुए मृगावती चंदनबाला से लिपट पड़ीं।

धीरे-धीरे लोगों में इस बात की चर्चा चलने लगी कि चंदनबाला की ऐसी दुर्दशा करनेवाली धनावह सेठ की पत्नी मूला ही है। लोगों ने मूला की खूब निंदा की।

चंदनबाला ने कहा, "मूला की निंदा करने का कोई कारण नहीं है। उसने अगर मेरी यह दशा न की होती तो आज मैं भगवान की कृपा न पा सकती। उसी के कारण मैं भगवान को संतुष्ट कर सकी। उसका बहुत बड़ा उपकार है। उसकी निंदा हमें नहीं करनी चाहिए।"

चंदनबाला की इस क्षमावृत्ति को देख कर लोगों के सर झुक गये। चंदनबाला उसी क्षण एक दूसरे विचार में खो गयी।

उसकी आंखों के आगे इस विचित्र संसार की एक-एक तस्वीर चित्रपट के समान दीखने लगी। लड़ाई में पिता का पराजय, पिता का कहीं भाग जाना, माता की आत्महत्या, लुटेरे सैनिक का निर्दयी व्यवहार, खुलेआम बाजार में अपनी नीलामी, अंधेरी कोठरी में तीन-तीन दिनों तक भूख-प्यास से तड़पना। बचपन में राजमहल का सुख भी क्षणिक निकला। ये सारी घटनाएं चंदनबाला की बंद आंखों के सामने घूमने लगीं।

क्या मतलब है ऐसे संसार में सुख की तलाश में भटकने का? चंदनबाला का मन कहीं और चला गया। उसने वैराग्य स्वीकार करने का फैसला कर लिया।

इतने में धनावह सेठ लुहार को लेकर पहुंचे। चंदनबाला की बेड़ियां कट गयीं।

वे चंदनबाला से कहने लगे, "बेटी, दुःख सहने में तूने कोई कसर नहीं छोड़ी। मगर अब तुझे बिलकुल दुःख नहीं होगा

तू सुख से मेरे पास रहना। मूला को मैं घर से निकाल दूंगा, वही तेरे सब दुःखों का कारण है", सेठ के शब्द-शब्द से मूला के लिए धिक्कार बरस रहा था।

चंदनबाला ने गंभीर, अर्थपूर्ण नजरों से धनावह सेठ को देखा और कहा, "पिताजी, मूला को घर से निकालने की कोई जरूरत नहीं है।"

सेठ ने पूछा, "क्या कह रही है बेटी?"

चंदनबाला ने कहा, "पिताजी, आपने मेरे पैरों से लोहे की बेड़ियां ही नहीं कटवा दीं, इस कुरूप संसार की सारी बेड़ियां भी कट गयी हैं। मैं इस कुरूप संसार को छोड़ रही हूं।"

धनावह सेठ दंग रह गये।

मृगावती ने भी राजमहल में आकर बसने के लिए कहा तो चंदनबाला ने यही जवाब दिया, "मौसी, राजमहल का सुख भी क्षणभंगुर है। इस खत्म न होनेवाले सुख को पाने के लिए मैं वैराग्य की राह अपना रही हूं। मैंने यही संकल्प कर लिया है।" इस वैराग्य की भावना से प्रभावित हो, लोग चंदनबाला का वंदन करने लगे।

लोगों की भीड़ चीरती हुई चंदनबाला भगवान महावीर के पास पहुंची।

हाथ जोड़कर बोली, "भंते! मुझे जीवनमुक्ति दिलानेवाले आप, अब मुझे धर्म की दीक्षा दीजिए। संसार से मेरा मन उठ गया है। मुझे तो अब चाहिए परम सुख!"

भगवान महावीर ने कहा, "तेरी यह वैराग्य-भावना धन्य है। असार संसार से तेरा मोह छूट गया है, यह भी बड़ी बात है। मगर फिर भी संसार में रहकर ही तू पांच अणुव्रतों का पालन कर। बाद में मैं तुझे दीक्षा दूंगा।"

चंदनबाला ने भगवान की आज्ञा पूरी तरह मान ली। पांच अणुव्रतों के पूरा होने पर चंदनबाला ने धर्म दीक्षा ली, और भगवान महावीर की परम शिष्या बनी। ●

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा की स्थापना १९३८ में महात्मा गांधी की प्रेरणा तथा पेरीन बहन केप्टन के सद्प्रयत्नों से हुई थी। इस संस्था की कोशिश ऐसी राष्ट्रभाषा विकसित करने की रही है, जिसे आम जनता आसानी से समझ सके और जो नागरी व उर्दू दोनों लिपियों में लिखी जा सके। वह भाषा है हिन्दुस्तानी !

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा दुनिया के सभी धर्मों से चुनी हुई, ज्ञान और आनन्द से भरी कहानियों की एक सौ किताबों का जो सेट बच्चों के लिए तैयार कर रही है, यह उसकी पांचवीं किश्त है। इस सेट के हर किताब की कीमत दो रुपये होगी।

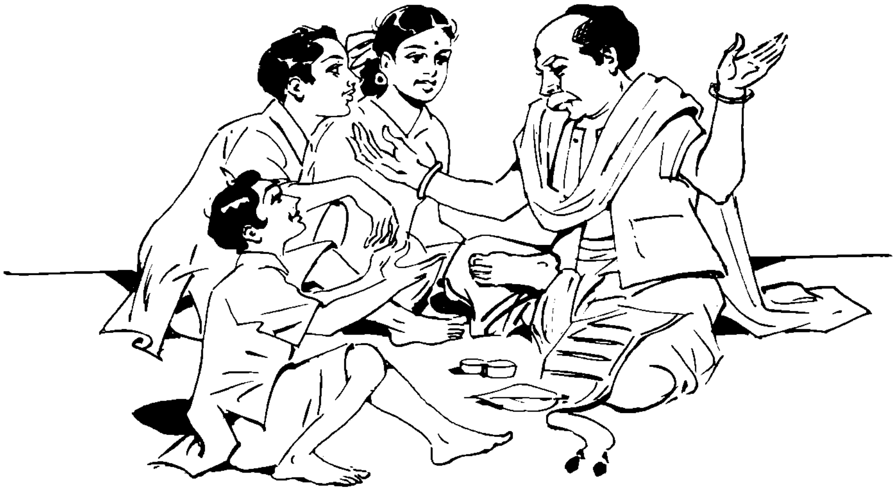

हमारे आगामी प्रकाशन

- राजा महाजनक
- संत जलाराम
- कंजूस इल्लीस
- कूरगडु मुनि
- कण देवता
- बक राक्षस का वध
- हनुमान
- स्वामी विवेकानंद
- सुनहरा नेवला
- भाई हो तो भरत जैसा

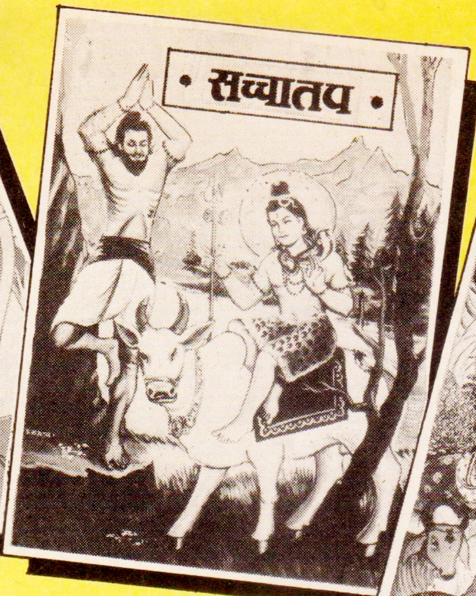

बच्चों की कहानियां
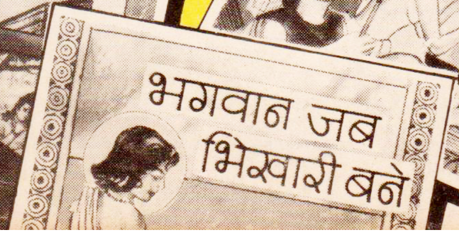
हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
महात्मा गांधी मेमोरियल बिल्डिंग
बम्बई–४०000२